मेरा नाम खुमान सिंह है, जाति का पटेल हूं और अच्छी खासी कमाई है. मेरी शादी को अभी सात ही दिन हुए थे. हुआ युं कि हमारा गांव कही और है और हम गांव से लगभग १२ घंटे के रास्ते पर रहते है जहां मेरी जॉब है. शादी मेरी गांव से हुई और फिर मै अपनी वाईफ को लेकर शहर आ गया. घर वाले सब गांव मे ही रूक गये थे कि हम दोनो को अकेले समय गुजारने का टाईम मिलेगा. सात दिन बाद बड़े बुजुर्गो ने कहा कि पग फेरे के लिए मेरी वाईफ को गांव लेकर आ जाओ. वो १५ दिनो के लिए अपने मायके वापस जायेगी. सो हमने वापसी कि तैयारी शुरू कर दी. मेरी वाईफ अमिता बहुत ही खूबसूरत लड़की है, रंग गोरा, बदन मे कसाव, सांचे मे ढला बेदाग बदन, लंबे बाल, गुलाबी होंठ और अच्छा कद. मै अपनी किस्मत पर फक्र कर रहा था ऐसी लड़की से शादी करके. ये अलग बात है कि जो कोई मेरी वाईफ को देखता है उसकी आखों मे कामुकता नजर आने लगती है. वो उसे वासना भरी नजरो से घूरने लगता है. बाहर वालो की छोड़ो मेरे करीबी रिश्तेदार तक शादी के रिशेप्शन मे ऐसे ही कर रहे थे. बस एक ही परेशानी है मेरी वाईफ के साथ, वो जरूरत से ज्यादा ही डरपोक है. मैने उसे काफी समझाया भी पर एक हफ्ते मे कितना चेंज लाया जा सकता है.

हम दो तीन कपडे ले कर गांव कि तरफ निकल गये. ट्रेन ३ घण्टे लेट थी, सो २ के जगह ५ बजे पहुंचे. बाहर सिर्फ एक ही बस खड़ी थी सो हम उसमे चढ़ गये. अंदर बैठने को बिल्कुल जगह नही थी. अंदर बस खचा खच भरी हुई थी. आगे की तरफ गांव के लोकल लोग बड़ी बड़ी टोकरियां लेकर बैठे हुए थे. पीछे आखरी लाईन मे कुल आठ लड़के दो लाईन मे बैठे हुए थे. हमे कन्डक्टर ने अंदर की तरफ ढकेल दिया और आखरी लाईन तक चले गये. बस चल पड़ी और हम रौड पकड़ कर खड़े हो गये. थोड़ी दूर जाने के बाद उन आठ लड़को मे से एक खड़ा हुआ और मेरी वाईफ अमिता को बैठने को बोला. अमिता मेरी तरफ देखने लगी और मैने उसे इशारे से बैठने को कहा. वो बैठ गई और मै खड़ा रहा. थोड़े देर बाद कन्डक्टर के बगल की सीट खाली हो गई और मै उसमे जा कर बैठ गया. रास्ता अभी लम्बा था सो मैने कन्डक्टर के साथ इधर उधर की बातें करने लगा. ३० मिनट बाद एक स्टाप आया और सारे गांव के लोकल लोग बस से उतर गये. मै कन्डक्टर के साथ १० मिनट मे अपनी बातें खत्म की और सोचा कि बस तो खाली हो गई और तो पीछे अमिता के साथ बैठ जाता हूं.

जैसे ही पीछे मुड़ा तो मेरे होश उड़ गये. अमिता बिना कपड़ो के सीटो के बीच के गलियारे मे झुक कर खड़ी थी, उसने सहारे के लिए सामने के दोनो सीटो के हथ्थे को पकड़ा हुआ था. एक आदमी बिना कपड़ो के उसके पीछे से उसे धक्के लगा रहा था और साथ मे पीछे से हाथ ला कर उसकी स्तनो को मसल रहा था. अमिता मेरी तरफ ही देख रही थी पर जैसे ही उसने देखा की मै देख रहा हूं उसने नजरे नीचे झुका ली. कन्डक्टर ने भी उसी समय पीछे मुड कर देखा. दो पल रूक कर उसने कहा, "क्या सुभाष भईया ये

किस चुतिये की लुगाई को सरे बाजार मेरा मतलब है सरे आम ठोक रहे हो." पीछे से एक आदमी ने कहा, "अबे वो चुतिया तेरे ही बगल मे बैठा है." कन्डक्टर मेरी तरफ देख कर बोला, "तेरी लुगाई है?" मै कुछ बोलता उससे पहले खुद ही बोला, "कसम से क्या जबरदस्त माल है, एक दम सांचे मे ढला बदन है, अंग अंग मे कसावट है, नई नई शादी लगता है. बदन से शहद टपक रहा है, और यही शहद सुभाष भईया मजे लेकर पी रहे है." तभी एक और ने चिल्ला कर कहा, "अबे बिरजू! अब बस कही नही रूकनी चाहिए, तेरी दिहाड़ी का हर्जाना हम भर देंगे." कन्डक्टर बोला, "हमे हर्जाना नही चाहिए बस हमे और ड्राईवर को इस हुसन परी को ठोकने का मौका दे देना." मै उठ कर अमिता के पास पहुंचा, जब तक ४ लोग सीट कूद कर सामने की सीट पर आ गये. एक ने कहा, "क्या सोच रहा है कि ये सब कैसे हो गया." मै उसकी तरफ रूआंसा होकर देखने लगा तो वो बोला, "अबे चुतिये, तेरे बैठने के बाद से ही तेरी लुगाई के अगल बगल बैठने वालो ने कपड़ो के उपर से तेरी लुगाई के सामान पर हाथ फेरना शुरू कर दिया था. फिर धीरे धीरे करके उसके ब्लाऊज के बटने खोले, फिर ब्लाऊज बाहर निकाले, फिर ब्रा निकाले, फिर इसे उठा कर इसकी साड़ी पेटीकोट समेत निकाल लिये और फिर आराम से बैठ कर इसके बदन से खेलते रहे. जब देहाती लोग उतर गये तो तेरी लुगाई को खड़ा करके सुभाष भईया ठोकने लगे." दूसरे आदमी ने कहा, "बड़ा ही अव्वल दर्जे का चुतिया है बे तू, आठ मर्दो के बीच मे अपनी लुगाई को बैठा दिया था और एक बार भी पलट के नही देखा कि ठीक है या नही." तीसरे ने कहा, "अब एक काम कर चुपचाप साईड मे बैठ जा, क्योकि अब कार्यक्रम चालू हो गया है और हम सब के निपटने के बाद ही तुम लोगो को जाने देंगे." चौथा बोला, "ज्यादा चूं चपड़ करेगा तो मार मार कर तेरी हड्डी पसली तोड़ देंगे और अपना काम खत्म करने के बाद किसी सुन्साने मे तुम दोनो की गर्दन मरोड़ कर फेंक देंगे. मै धीरे से एक सीट मे बैठ गया और सर नीचे झुका लिया. ये अगल बात है की चोर नजरो से मै बीच बीच मे अमिता की तरफ देख रहा था.

अमिता सर झुका कर खड़ी थी, धक्को से उसके पूरे बदन मे कंपन हो रहा था और वो आगे की तरफ झुकी जा रही थी पर वो सीटो के हथ्थे को मजबूती से थामे हुई थी. अचानक सुभाष नाम के उस आदमी ने उसे पीछे से कस कर जकड़ लिया, सब के साथ साथ मुझे भी समझ आ गया कि वो अपने लण्ड को अंदर खाली कर रहा था. दो मिनट बाद वो अमिता से अलग हुआ और बाकि सब की तरफ देख कर इशारा किया. एक आदमी जो पहले से कपड़े उतार चुका था, जल्दी से उसकी जगह ले लिया. अब वो अमिता को पीछे से धक्के लगाने लगा और सुभाष अपने लण्ड को सहलाते हुए मेरे बगल वाली सीट मे आकर लेट गया. उसने मुझसे पुछा, "क्या नाम है इस रसदार पटाखा का?" मैने कुछ नही कहा तो उसने

मेरे बालो को पकड़ कर खीचा और कहा, "मैने इस पटाखा का नाम पुछा, रेट नही पूछा जो इतनी तकलीफ हो रही है." मैने धीरे से कहा, "अमिता." उसने कहा, "क्या जबरदस्त चुत है साली की, पहली बार घुसाते ही समझ आ गया था कि नई नई नथ उतरी है. वरना जितनी आसानी से मेरे चमचो ने कपड़े उतार लिये थे, उससे से तो लगा था कि कोई रंडी है." मै चुप चाप सर झुका कर बैठा था. उसके एक चमचे ने कहा, "भईया, रंडी है नही तो बना देंगे." और सब हंसने लगे.

एकाएक दो लोग उठे और अमिता कि सामने का कर उसके आगे वाली सीट मे बैठ गये. अमिता के स्तन सामने की तरफ लटक रहे थे सो दोनो ने उसके निप्प्लो को चूसना शुरू किया, दोनो उसके स्तनो से खेल भी रहे थे. एक और जा कर उसके सामने घुटनो के बल बैठ गया और उसके पेट और कमर को चूमने लगा. वो उसकी जांघो और चुत्तड़ो पर भी हाथ फिरा रहा था. अब तक पीछे वाला निपट चुका था और अगला उसकी जगह ले चुका था. जो निपट चुका था वो आकर सुभाष के सामने बैठ गया. सुभाष ने पूछा, "सब को निपटा लेगी?" उसने कहा, "गांव की छोरी लगती है, आसानी से निपटा लेगी" और दोनो हंसने लगे. थोड़ी देर बाद एक और निपट गया और चौथे ने उसके चुत मे अपने लण्ड को ठेल दिया. वो भी धक्के लगाने लगा और बाकि लोग उसके बदन से खेलते रहे. जैसे ही चौथे ने पिचकारी छोड़ी अमिता ने अपने घुटने मोड़ दिये. एक बोला, "अरे अरे बेचारी, थक गई है, हटो सब परे, आराम करने दो." सब अलग हट गये और उसने अमिता को एक सीट पर पेट के बल लिटा दिया. वो बोला, "ले थोड़ा आराम कर ले, तेरी चुत भी थक गई होगी. उसे भी आराम देते है थोड़ी देर." वो अपने कपड़े उतारने लगा और अमिता पर लेट गया. दोनो सीट के पीछे चले गये और मुझे दिखना बंद हो गये. बस अमिता और उसकी टांगे ही दिख रही थी. वो पैरो से अमिता की टांगे फैला रहा था, अचानक अमिता चीखने लगी, ठीक उसी तरह जैसे पहली बार जब मैने अपना लण्ड उसकी चुत मे घुसाया था. मै उठने को हुआ तो सुभाष ने मेरे कंधो को पकड़ कर बैठा दिया. उसने कहा, "फिक्र मत कर यार, वो अमिता की गांड़ मार रहा है." उसने चिल्ला कर कहा, "अबे तिवारी धीरे, साली की चुत इतनी टाईट है तो गांड कितनी होगी. और तू साले उसकी गांड पर पिल पड़ा." धीरे धीरे अमिता कि चीखें कम होती गई और फिर वो शांत हो गई. ५ मिनट के बाद तिवारी पसीना पोछते हुए उठा और सामने कि तरफ आ गया. अमिता उठ ही रही थी जब अगले ने कहा, "लेटी रह, मुझे भी तेरी गांड ही मारनी है." और वो तेजी से उसकी सीट की तरफ चल दिया. कपड़े पहले ही उतार चुका था सो वो सीधे अमिता पर लेट गया. अब न अमिता की आवाज आ रही थी न उसकी, १० मिनट बाद वो भी पसीना पोछते हुए उठ गया. उसने अमिता से पुछा, "और गांड मरवाना है या चुत का निमंत्रण है?" अमिता के पैरो से पता चल रहा था कि वो घूम कर

पीठ के बल लेट गई थी. दो लोग बचे थे दोनो कपड़े उतार कर उसकी सीट के तरफ चल दिये. एक अमिता पर लेट गया और दूसरा उनके विपरित वाले सीट पर बैठ गया. १० मिनट बाद एक निपट कर हमारी तरफ आ गया और आखरी वाला, अमिता पर लेट गया. १० मिनट उसे भी लगे और वो पसीना पोछते हुए हमारी तरफ आ गया.

अमिता उठ कर बैठ गई, उसका सर गले तक दिखाई दे रहा था और वो हमारी तरफ नही देख रही थी. सुभाष चिल्ला कर बोला, "अबे कन्डक्टर की औलाद, तेरा नम्बर आ गया." कन्डक्टर दौड़ते हुए अमिता के सीट तक पहुंचा और अमिता से कुछ बोलने लगा. फिर अमिता वापस लेट गई. और वो जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगा. वो धीरे से उसके उपर लेट गया. १५ मिनट हो गये तो सुभाष ने कहा, "अबे तिवारी देख तो वो कन्डक्टर की औलाद क्या कर रहा है." इतना बोलना था कि वो कन्डक्टर उठ खड़ा हुआ. सुभाष बोला, "क्या कर रहा था बे, इधर ड्राईवर अपनी बारी का इन्तजार करते करते पैंट मे ही पानी छोड़ देता. जा उसे भी भेज दें. और सुन मेरे गांव पर रोक लेना." कन्डक्टर सर हिला कर चला गया और थोड़ी देर बाद ड्राईवर आ गया. ड्राईवर को मुश्किल से ५ मिनट लगे होंगे और वो वापस आ गया. सुभाष ने तिवारी से कहा, "तिवारी छोरी को कपड़े दे दे." तिवारी ने उपर रेक से अमिता के कपड़े निकाला और उसे दे दिये. अमिता उठ कर बैठ गई और कपड़े पहनने लगी. १० मिनट बाद बस एक जगह रूक गई. ड्राईवर ने चिल्ला कर कहा, "हरिहरपुर." सुभाष कपड़े पहनने लगा और मुझसे पुछा, "तेरा गांव कौन सा है." मैने डरते डरते उसे बता दिया. उसने कहा, "अरे तेरी तो, बहुत आगे आ गये है. चल दोनो मेरे साथ चलो सुबह मै दोनो को छोड़ दूंगा." मै हिचका तो उसने कहा, "इस बस से आगे जायेगा तो ये सब पता नही आगे क्या करें, शायद तेरी गर्दन ममोड़ दे और तेरी लुगाई को अपने गांव ले जायें." मै चुपचाप खड़ा हो गया और अमिता के साथ निचे उतर गया. कन्डक्टर ने हमारा सामान निचे उतार दिया.

सामने एक जीप खड़ी थी और सुभाष उसमे बैठ गया. हम भी उसके पीछे पीछे उस जीप मे बैठ गये. वो जीप चलाने लगा और २० मिनट बाद एक बड़ी सी बंगले के पास रोक दिया. हम लोग नीचे उतरे और अंदर ने नौकर आकर हमारा सामान ले लिए और अंदर चल दिये. सुभाष ने एक नौकर को कुछ समझाया और फिर हम सब अंदर चल दिये. अंदर उसने अमिता को एक कमरा दिखाया और बोला कि ये उसका कमरा है और हम दोनो आज यही सो सकते है. उसने अमिता से नहा कर फ्रेश होने को कह दिया और मुझे साथ आने को को कहा. हम दोनो साथ चल दिये और उसने मुझे अपनी पूरी हवेली घुमाई. ३० मिनट बाद हम आकर डाईनिंग टेबल पर बैठ गये. वो मुझसे बोला, "देखो खुमान, जो हो

गया सो हो गया पर हमारा इरादा शुरू से गलत नही था." मै सर झुकाये बैठा रहा. उसने कहा, "अपने घर फोन करके बोल दो कि रात मे यहां रूक रहे हो." मैने कहा, "घर पर फोन नही है." उसने कहा, "तो ससुराल फोन कर दो." मैने कहा, वहां भी नही है." उसने मेरे ससुराल और ससुराल वालो के बारे मे औपचारिक सवाल किये और मैने उसे बता दिया. ये अलग बात है कि बाद मे मुझे लगा कि मुझे ये नही बोलना चाहिए था. तभी दो लोग और आ गये और डाईनिंग टेबल पर बैठ गये. सुभाष ने बताया कि वो दोनो उसके जिगरी दोस्त थे और धंधे मे पार्टनर भी थे. दो मिनट बाद अमिता भी डाईनिंग टेबल पर आ गई और हमने साथ मे खाना खाया. फिर मै और अमिता उठ कर रूम मे चले गये. अमिता बिस्तर पर बैठ गई और मै ये सोचने लगा कि उससे कैसे बात करूं. अभी दो मिनट भी नही हुए थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया. मैने धीरे से दरवाजा खोला तो देखा कि सुभाष दरवाजे पर खड़ा था और साथ मे उसके दोनो दोस्त भी थे. उसने मुझसे कहा, "ये किसका कमरा है?" मैने हड़बड़ा कर कहा, "जी आपका." सुभाष बोला, "तो हरामखोर तू मेरे कमरे मे क्या कर रहा है." उसके दोनो दोस्त जोर जोर से हंसने लगे. सुभाष आगे बोला, "चल सोच मत निकल बाहर." उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बाहर खींच लिया. मेरे बाहर आते ही तीनो अंदर घुस गये और अंदर से दरवाजा बंद कर लिये. अमिता अंदर थी और मुझे शुरू से ही इसका अंदेशा था पर मै हालात के आगे मजबूर हो गया था. मै खिड़की तक गया और उसके झिर्री से अंदर झांकने लगा. अंदर तीनो बेड पर लेटे थे और अमिता साईड मे खड़ी थी. अंदर की आवाज बाहर तक नही आ रही थी. सुभाष अमिता को कुछ बोल रहा था. अमिता धीरे धीरे अपने कपड़े उतारने लगी. और पूरी तरह नंगी होकर बिस्तर पर लेट गई. सुभाष घुमते फिरते खिड़की तक आया और उस पर पर्दा चढ़ा दिया. अब मुझे अंदर दिखना भी बंद हो गया और मै सोफे पर जा कर लेट गया. लेटे लेटे मुझे नींद आ गई और फिर सुबह पांच बजे ही नींद खुली. साढ़े पांच मे कमरे का दरवाजा खुला और सुभाष के दोनो दोस्त बाहर निकले और सुभाष मुझे देख कर दोबारा दरवाजा बंद करने लगा. मुझे अमिता एक पल के लिए दिखी, वो बिस्तर पर नंगी दोनो टांगे फैला कर पड़ी थी.

दरवाजा वापस बंद हो गया और फिर सुबह ८ बजे ही खुला. सबसे पहले अमिता निकली और फिर सुभाष. अमिता सीधे गाड़ी मे बैठ गई और सुभाष मुझ तक आकर बोला, "चलो तुम दोनो को गांव छोड़ देता हूं." मै चुप चाप जीप मे बैठ गया और लगभग १ घण्टे के बाद हम अपने गांव पहुंच गये. मेरे घर पर पहुंचने से पहले सुभाष ने मुंह पर कपड़ा बांध लिया था. जीप रूकी और मेरी अम्मा हमे जीप तक लेने आई. उन्होने आते ही कहा, "बेटा, बहु के मायके वालो का संदेशा है कि वो लोग लेने नही आयेंगे,

हमे ही बहू को पहुंचाना पड़ेगा. हम जीप से उतरे और जीप आगे निकल गई. अमिता अंदर चली गई और मुझे मेरे पिताजी गांव के बाजार ले गये, खरीदारी करने. उन्होने बताया कि दो दिन बाद कुछ खास सगे सम्बंधियो को न्योता है सो मुझे उन्हे खाना खिलाना है. हम शाम तक वापस आये तो देखा एक कार बाहर खड़ी है, घर आये तो पता चला कि अमिता के गांव से कोई उसे लेने आया है. हम दोनो सीधे उससे मिलने पहुंचे. जैसे ही मैने उस आदमी को देखा करंट लगा. सामने सुभाष खड़ा था, मुझे समझ नही आ रहा था कि ये अमिता का गांव वाला कैसे हो गया. मेरे पिताजी ने उससे अमिता के गांव के बारे मे कुछ सवाल पूछे और फिर संतुष्ट होकर बोले के अमिता तो साथ भेज दो. मै समझ रहा था कि कोई चाल है पर बोलता कैसे और क्या बोलता. मेरा बहाना सोचते सोचते अमिता मजबूरी मे कार मे बैठ गई. मजबूरी इसलिए क्योकि शक्ल पर लिखा था, और सुभाष कार लेकर निकल गया. मुझे लग रहा था कि अमिता अपने गांव नही पहुंचेगी और मै अपने ससुराल जाने की जुगल लगाने लगा.

अगले दिन पिताजी को बोला तो वो भड़क गये, बोले सगे सम्बंधियो के न्योते के बाद चले जाना. जैसे तैसे मैने अगले दिन का न्योता निपटाया. शाम को फिर कहा तो पिताजी बोले कि सुबह चले जाना. सुबह बोला तो अम्मा बोली कि रिश्तदारो के सामने जायेगा तो अच्छा नही लगेगा, रिश्तदारो को जाने दे फिर जाना. रिश्तदारो को जाते जाते दो दिन और निकल गये और उसके अगले दिन दो बजे पिताजी ने मुझे ससुराल जाने की पर्मिशन दे दी. अब तक अमिता को गये हुए ५ रातें और ४ दिन हो गया था. मै बस पकड़ कर अमिता के गांव पहुंचा, पहुंचते पहुंचते रात हो गई. मेरे ससुराल वालो ने मेरा स्वागत किया और मुझे एक कमरे मे बैठाया. थोड़े देर बाद अमिता अपनी बड़ी बहन के साथ आई. अमिता गेट पर खड़ी हो गई और उनकी बड़ी बहन मेरे बगल मे आकर बैठ. और मुझसे बोली, "सच मे आप अमिता से बहुत प्यार करते है. आज दोपहर मे ही अमिता यहां आई और शाम को आप पहुंच गये." मैने चौक कर कहा, "आज दोपहर मे?" उसकी बड़ी बहन ने कहा, "हां तो और क्या! दोपहर मे आपके गांव से सुभाष नाम का आदमी अमिता को पहुंचाने आया था." मैने अमिता की तरफ देखा तो वो नीचे देखने लगी. उसकी बड़ी बहन ने कहा, "ऐसा लगता है आप अमिता तो रात भर सोने नही देते हो, दोपहर मे उसकी हालत देख कर तो ऐसे ही लग रहा था. अब आई है तो एक महीना आराम करके जायेगी. और आज भी मेरे पास ही सोयेगी." मुझे एक कमरे मे सुला दिया गया. मेरी दो दिन कि छुट्टी ही बाकि थी तो बिना अमिता से मिले और बिना बात किये मेरे शहर वापस आना पड़ा. रास्ते भर यही सोचते आ रहा था कि ४ दिन और ५ रातो तक अमिता सुभाष के पास रही और इस दौरान उसने अमिता का रंडी की

तरह इस्तेमाल किया होगा. जो आदमी मेरे रहते मे मेरी वाईफ को एक रंडी समझ कर मेरे ही सामने अपने चमचो के साथ चोद सकता है, और मुझे कमरे से निकाल कर रात भर मेरी वाईफ के जिस्म से खेल सकता है, वो जब अकेले अमिता के साथ ५ दिन रहा होगा तो पता नही क्या क्या हुआ होगा. पर ये तो अमिता के आने के बाद ही मालूम होगा, और अमिता आयेगी एक महीने बाद.

खुमान सिंह